इस्लाम के दाएरे में आ जाते हैं।

''जोरास्टर के तन्त्र (सिसटम) से ज़्यादा शुद्ध, मूसा के कानून से ज़्यादा छूट हमें मुहम्मद के धर्म में मिलती है। जिसमें हर चीज़ के पीछे कोई वजह (कारण) है और कोई अन्धविश्वास नहीं है। जिससे सातवीं शताब्दी में ईसा मसीह की दी हुई सीखों का अपमान किया गया था।''

''मध्यकाल में फैला हुआ इस्लाम आधुनिक तकनीक और नये परिवर्तनों पर आधारित था। इस्लाम में लोगों का इल्मी स्तर शिक्षा स्तर यूरोप के लोगों से बढ़ा दिया। इस्लाम ने ग्रीस (देशों का नाम) की संस्कृति सभ्यता का समांगीकरण (प्रत्येक भाग बराबर किया) किया कि आज हमें ग्रीस की कई सांस्कृतिक किताबें अरबी में मिलती हैं। इस्लाम में पवन चक्की, त्रिकोणिमती (गणित का एक भाग) आधुनिक पाल नौका (जिसके पाल ४५ के कोण पर रहते हैं) ईजाद (आविष्कार) किया। और धातुकर्म, यान्त्रिक और रासायनिक अभियान्त्रिकी और खेती के आधुनिक तरीके बताए। मध्यकाल में तकनीक को इस्लाम से यूरोप हासिल कर रह था ना कि युरोप से इस्लाम। केवल पन्द्रहवी शताब्दी के बाद तिनके के बहाव की दिशा के बहाव की दिशा बदल गई।

''मैं कभी कभी सोचती हूँ कि औरत की इस्लाम में ईसाई धर्म से ज़्यादा छूट है। औरत इस्लाम में ज़्यादा सुरक्षित है बनिस्बत (तुलना में) उस धर्म में सिमें एक औरत से शादी करना बाताया जाता है। कुरान में औरत के लिए कानूनों में ज़्यादा रिआयत है। अभी सिर्फ बीस साल पहले ईसाई इंग्लैण्ड में औरत का जायदाद (सम्पत्ति) पर हक़ पहचाना गया है। जबकि इस्लाम ने इसे पहले ही सपष्ट रूप से प्रस्तावित कर दिया था।

क्या सभी साथी अच्छे और सच्चे थे।

क्या सभी साथी अच्छे और सच्चे थे।

सुन्नी आलिम (शिक्षक मौलाना) इस्तेमाल करते हैं मोहम्मद मुस्तफा (स.अ.) केसहाबी (दोस्त) अलवालिद का उदाहरण जिनका नैतिक पतन हो चुका था। उनके पीछे लोग नमाज़ पढ़ते थे, यह कहने के लिए एक पेश इमाम (जो व्यक्ति नमाज़ पढ़ाता है) चाहे अच्छा हो या गुनाहगार, आप नमाज़ पढ़ सकते हैं उसके पीछे।

(अली कक्कारी अल-हरावी अल हनफी, पाठ इट इज परमीसीबल टू प्रे बिहाईंड गुड परसन, पृष्ठ ९०) (इब्ने तैतीया, माजमा फत्वा, रियाद १३८१, वैलयूम.३, पेज २८)

झुकाकर कहते हैं, हे ईश्वर तू ही सबसे महान है।'' मैं इस्लाम की एकता नुमा स्वभाव के बारे में जानकर आश्चर्यचकित (हैरान) हो गई। जो एक आदमी को दूसरे आदमी को अपना भाई समझने पर मजबूर कर देता है।''

''जात-पात के भेदभाव को जड़ से ख़त्म करके इस्लाम को सबसे हटकर विजय प्राप्त हुई है। जबकि दुनिया में आज इस्लाम की इसी खूबी का प्रचार करके जांत पांत को खत्म किया जा रहा है।''

''मैं मुसलमान नहीं हूँ वास्तिवक तौर पर फिर भी मैं खुद को मुस्लमान समझता हूँ क्योंकि मैं खुदा के सामने सर झुका चुका हूँ। ौर यह मानता हूँ कि कुरान और दूसरी इस्लामिक किताबें जिसमें इस्लाम के दूसरे नज़िरये हैं वह ईश्वरीय सत्य का खज़ाना है। जिससे अभी हमें काफी कुछ सीख लेना है और इस्लाम बेशक।

''हमारा यह मानना है कि सन् ६९९ से १०० ई. तक काला युग, कंता मकमेद्ध था। यह इस बात को प्रकट करता है कि हमने पश्चिमी युरोप, भारत से स्पेन तक इस्लामिक समाज खूबसूरती से पनप रहा था। साई राज्य ने इस्लाम के फैलाने के दौरान (समय में) काफी कुछ खोया मगर इसके विपरीत हम यह सोचते हैं कि पश्चिमी यूरोपीय सभ्यता एक सम्पूर्ण सभ्यता है मगर यह गलत ख्याल

है।''

''मगर इस्लाम के नियम (उसूल) मानवता के कर्तव्य है। इस्लाम पूर्वी देशों में युरोप से ज़्यादा समाजिक दुनिया पैदा करने और भाईचारा फैलाने में कामयाब रहा। किसी दूसरे समाज की विजय का ऐसा कीर्तिमान (रिकार्ड) नहीं रहा कि जो मानवता में इस्लाम जैसी एकता पैदाकर सका हो। इस्लाम में अभी भी इतनी शक्ति (ताक़त) है कि जांत पांत का भेज भाव जो अभी भी समाज में फैला है उसे ख़त्म कर दे। पूर्वी ओर पश्चिमी देशों में जो परस्पर विरोधभास (इख्तेलाफ) है बगैर इस्लाम की मदद से उसे नहीं ख़त्म किया जा सकता। इस्लाम के हाथों में युरोप और पूर्वी देशों के बीच ख़राब सम्बन्धों का समाधान (हल) है।

मुहम्मद मुस्तफा (स.अ.) ने औरतों का मर्तबा (महत्व) बढ़ाया यह एक ना झुठलाई जाने वाली सच्चाई है। कोई दूसरा मज़हब इस्लाम की तरह तेज़ी से नहीं फैला। इस्लाम के बारे में पश्चिमी नज़रिया यह है कि इस्लाम के बारे में पश्चिमी नजिरया यह है कि इस्लाम को तलवार के दम पर फैलाया गया मगर कोई शिक्षाविद् इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं है। मगर कुरान इस बात को सपष्ट करता है कि किसी व्यक्ति को ज़बरदस्ती (बल पूर्वक) इस्लाम मानने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता।

''मैं मानता हूँ कि खुदा एक है और मुहम्मद (स.अ.) उनके रसूल हैं। यह बहुत आसान और न बदलने वाला कलमा (बात) है। जिससे आदमी इस्लामके दायरे मे आता है। इस्लाम में जिसकी पूजा की जाती है यानी 'ख़ुदा' के लिए कोई मुर्ति मौजूद नहीं है। रसूल की इज़्ज़त रखने के लिए किसी व्यक्ति को मानवता के दायरे से बाहर नहीं निकलना पड़ा और उनकी इज़्ज़त रखने वाले उनकी (मुहम्मद) को ज़िंदगी के तौर तरीके को अपनाकर फाएदे और